मेरी दया मेरे क्रोध से अधकि है (2 का भाग 1)

रेटगि:

ववरिण: [illegible]

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं ईश्वर के बारे में

द्वारा: Hala Salah (Reading Islam)

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

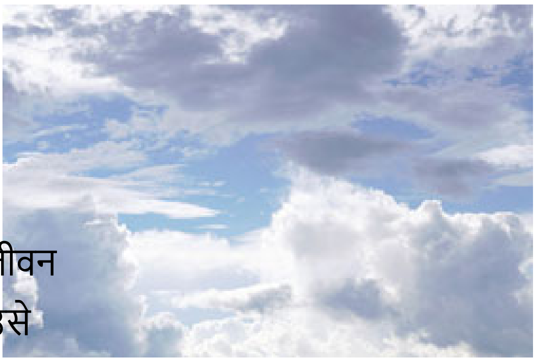

"क्षमा करने और दंड न देने की इच्छा" दया शब्द के लिए अक्सर इस्तेमाल की जाने वाली परभिाषा है, लेकनि इस्लाम में दया क्या है?

इस्लाम में दया का एक गहरा अर्थ है जो हर मुसलमान के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है, और दया दखिाने पर उसे ईश्वर द्वारा पुरस्कृत कयिा जाता है।

ईश्वर की दया सभी जीवों पर होती है, हर उस चीज़ में दखिाई देती है जसि हम देखते हैं। सूर्य में जो हमें प्रकाश और गर्मी देता है, और हवा और पानी में जो सभी जीवति लोगों के लिए आवश्यक है।

क़ुरआन के एक पुरे अध्याय का नाम ईश्वर की दवि्य वशिेषता *??-?????* या "सबसे दयालु" के नाम पर रखा गया है। इसके साथ ही ईश्वर की दो और वशिेषता दया शब्द से बनती है। वो वषिेशतायें है *??-?????* और *??-????* हैं, जसिका अर्थ है "कृपालु" और "परम दयालु"। क़ुरआन के 113 अध्यायों की शुरुआत में पढ़े जाने वाले वाक्यांश में इन दो वशिेषताओं का उल्लेख कयिा गया है: "ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।" यह वाक्यांश पाठको को ईश्वर की अंतहीन दया और महान उपहारों की नरिंतर याद दलिाता है।

ईश्वर हमें आश्वासन देता है कि जो कोई भी पाप करता है, यदि वह माफ़ी मांग ले और उस पाप को करना बंद कर दे तो उसे क्षमा कर दयिा जाएगा, वह कहता है:

"तुम्हारे ईश्वर ने अपने ऊपर दया अनविार्य कर ली है कि तुममें से जो भी अज्ञानता के कारण कोई पाप करेगा, फरि उसकी क्षमा याचना करेगा और अपने आप को सुधार लेगा, तो नि:संदेह अल्लाह अतिक्षमाशील दयावान् है।" (क़ुरआन 6:54)

इस छंद की पुष्टि पैगंबर मुहम्मद के इस कथन से होती है, जिसमें उन्होंने कहा कि ईश्वर कहता है:

“मेरी दया मेरे क्रोध से अधिक है”

पैगंबर मुहम्मद ने भी दया और करुणा करने वालो के लिए इनाम का आश्वासन दिया:

“दया करने वाले लोगों पर "परम दयालु" दया करता है। तुम पृथ्वी पर रहने वालों पर दया करो, और जो स्वर्ग में है वह तुम पर दया करेगा" (अस-सुयुति)।

पैगंबर की दया

पैगंबर मुहम्मद की दया के बारे में बताने से पहले यह बताना अच्छा रहेगा कि स्वयं ईश्वर ने उनके बारे में क्या कहा है:

“(हे नबी!) हमने आपको भेजा है समस्त संसार के लिए दया बना कर (क़ुरआन 21:107)

...जो आश्वासन देता है कि इस्लाम दया पर आधारित है, और यह कि ईश्वर ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) को समस्त संसार के लिए दया बना कर भेजा है।

ईश्वर क़ुरआन में भी कहता है:

"तुम्हारे पास तुम्हीं में से ईश्वर का एक पैगंबर आ गया है। उसे वो बात दुख पहुंचाती है जिससे तुम्हें दुख हो, वह तुम्हारी सफलता की लालसा रखता है और विश्वासियों के लिए करुणामय और दयावान् हैं।" (क़ुरआन 9:128)

ये छंद पैगंबर के शिष्टाचार और व्यवहार में स्पष्ट रूप से दिखता था, क्योंकि उन्होंने ईश्वर का संदेश देने के लिए कई कठिनाइयों का सामना किया। पैगंबर अपने लोगों का मार्गदर्शन करने में भी सबसे शांत थे, और जब भी लोग उन्हें नुकसान पहुंचाते थे, तो वो हमेशा ईश्वर से उनकी अज्ञानता और क्रूरता के लिए क्षमा करने की प्रार्थना करते थे।

पैगंबर के साथी

साथियों का वर्णन करते हुए ईश्वर क़ुरआन में कहता है:

“मुहम्मद ईश्वर के पैगंबर हैं; और जो उनके साथ हैं, वे अविश्वासियों पर भारी हैं और आपस में दयालु हैं" (क़ुरआन 48:29)

कुछ लोग कह सकते हैं कि मुहम्मद सदाचारी थे क्योंकि वह एक पैगंबर हैं, लेकिन उनके साथी सामान्य लोग थे जिन्होंने अपना जीवन ईश्वर और उनके पैगंबर की आज्ञाकारिता के लिए समर्पित कर दिया। उदाहरण के लिए, अबू बक्र अस-सिद्दीक ने अपनी सारी संपत्ति गुलामों को उनके क्रूर मालिकों से खरीदने में लगा दी और फिर उन्होंने गुलामों को ईश्वर की खातिर मुक्त कर दिया।

एक बार अपने साथियों को दया की सही अवधारणा समझाते हुए पैगंबर ने कहा कि यह परिवार और दोस्तों के प्रति दिया दिखाना नहीं है, बल्कि यह आम जनता के प्रति दया और करुणा दिखाना है, चाहे आप उन्हें जानते हों या नहीं।

एक "छोटी" दया

इस्लाम से पहले की कुछ बेरहम परंपराएं थीं देवताओं के लिए बलिदान के रूप में अपने बच्चे को मारना और लड़कियों को जिंदा दफनाना। बच्चों के खिलाफ इन कृत्यों को क़ुरआन और पैगंबर की सुन्नत में कई बार सख्त वर्जित किया गया है।

बच्चों के प्रति पैगम्बर की दया की बात करें तो, वह एक बार प्रार्थना का नेतृत्व कर रहे थे और उनके नाती हसन और हुसैन अभी भी छोटे बच्चे थे और खेल रहे थे और उनकी पीठ पर चढ़ रहे थे, अगर वे खड़े होते तो उन्हें चोट लग सकती थी, इसलिए पैगंबर ने अपनी प्रार्थना की अवधि को बढ़ा दिया। एक और उदाहरण, पैगंबर ने एक बार अपनी नतिनी उमामा को लेकर प्रार्थना की थी।

पैगंबर की यह दया न केवल उनके अपने बच्चों पर बल्कि सिड़क पर खेलने वाले बच्चों पर भी थी। वो जैसे ही पैगंबर को देखते, उनके पास दौड़ते हुए आते और पैगंबर उन सभी को एक हलकी मुस्कान के साथ गले लगाते।

प्रार्थना के दौरान भी पैगंबर की सहज दया स्पष्ट थी, जैसा कि उन्होंने एक बार कहा था:

"(ऐसा होता है) मैं प्रार्थना लंबी करने के इरादे से शुरू करता हूं, लेकिन किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर, मैं प्रार्थना को छोटा कर देता हूं क्योंकि मुझे पता है कि बच्चे के रोने से उसकी मां के दिल पर कैसी चोट पड़ती है" (साहिह अल-बुखारी)

कई जगह पैगंबर ने हमें सिखाया कि कैसे बच्चों को एक दयालु और प्यार भरे माहौल में पालना चाहिए, उनको पीटना नहीं चाहिए, या उनके चेहरे पर नहीं मारना चाहिए ये उन्हें अपमान से बचाते है। जब एक आदमी ने एक बार पैगंबर को अपने पोते को चूमते हुए देखा, तो वह पैगंबर की उदारता पर आश्चर्यचकित हुआ और कहा, **"मेरे दस बच्चे हैं लेकिन मैंने उनमें से किसी को कभी भी नहीं चूमा है।"** पैगंबर ने कहा,

"वह जो दया नहीं दिखाता, उस पर कोई दया नहीं दिखाई जाएगी" (सहीह अल-बुखारी)

सिर्फ एक बार बालों को सहलाना

जब ईश्वर ने क़ुरआन में अनाथों का उल्लेख किया तो उन्होंने कहा कि इसका क्या अर्थ है:

"इसलिए, अनाथों के साथ कठोरता का व्यवहार न करें" (क़ुरआन 93:9)

इस छंद के अनुसार अनाथों के प्रति पैगंबर का व्यवहार आया और उन्होंने कहा:

पैगंबर ने अपनी तर्जनी और बीच की उंगली को एक साथ जोड़ा और कहा कि "मैं और वह व्यक्ति जो एक अनाथ की देखभाल करता है और उसको खिलाता है, वह इस तरह स्वर्ग में जायेगा।" (अबू दाऊद)

अनाथ को अच्छा महसूस करवाने के लिए और अगर उसने अपने माता-पिता का स्नेह खो दिया है, तो अभी भी ऐसे लोग हैं जो उससे प्यार करने और उसकी देखभाल करने को तैयार हैं, पैगंबर ने दयालुता को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि वह व्यक्ति जो एक अनाथ के सिर को सहलायेगा उसे प्रत्येक बाल के लिए अच्छे कामों से पुरस्कृत किया जायेगा।

ईश्वर और उनके पैगंबर ने अनाथ की संपत्ति की सुरक्षा करने के लिए स्पष्ट रूप से कहा। उदाहरण के लिए, ईश्वर कहता है कि इसका क्या अर्थ है:

"जो लोग अनाथों की संपत्ति अन्याय से हड़पते हैं, वे अपने पेटों में आग भरते हैं और शीघ्र ही नरक की अग्नि में प्रवेश करेंगे।" (क़ुरआन 4:10)

पैगंबर का एक कथन हमें यह भी बताता है कि सात सबसे गंभीर पापों में से एक अनाथ की संपत्ति को हड़पना है।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/1183

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।